सूरह — एक कहानी

सूरह अत-तारिक़

रात को आने वाला

पूरा सफ़र — हर नफ़्स पर एक निगहबान —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 86 • 17 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

वस्-समा-इ वत्-तारिक़
1. क़सम है आसमान की और रात को आने वाले की।

अन्-नज्मुस्-साक़िब
3. वो चमकता हुआ सितारा जो अँधेरा चीर देता है।

इन कुल्लु नफ़्सिल्-लम्मा 'अलैहा हाफ़िज़
4. कोई नफ़्स ऐसा नहीं जिस पर एक निगहबान न हो।

फ़ल्-यन्ज़ुरिल्-इंसानु मिम्म ख़ुलिक़
5. तो इंसान देखे कि वो किस चीज़ से बनाया गया।

यौम तुब्लस्-सराइर
9. जिस दिन पोशीदा बातों की जाँच होगी।

फ़-महि्हलिल्-काफ़िरीन अम्हिल्हुम रुवैदा
17. तो मुनकिरों को मोहलत दीजिए, थोड़ी सी मोहलत।

वो सितारा जो अँधेरा चीर देता है

बेटा, यह सूरह एक ऐसी चीज़ की क़सम से शुरू होती है जिसे आपने हज़ार बार देखा है और शायद कभी उसके बारे में सोचा नहीं: 'वस्-समा-इ वत्-तारिक़ — क़सम है आसमान की और अत-तारिक़ की।'

'तारिक़', बेटा, 'तर्क़' से है — खटखटाना, मारना। अरबी में रात को आने वाले को 'तारिक़' कहा जाता है क्योंकि उस ज़माने में अँधेरे के बाद किसी घर पहुँचने वाले मुसाफ़िर को दरवाज़ा खटखटाना पड़ता था। तो अत-तारिक़ वो रात का आने वाला है, जो अँधेरे में दस्तक देता है।

और अल्लाह पूछते हैं: 'व मा अद्राक मत्-तारिक़ — और आपको क्या मालूम कि रात को आने वाला क्या है?' बेटा, जब भी क़ुरआन यह सवाल करता है, इसका मतलब है कि वो चीज़ आपके अंदाज़े से बड़ी है। और फिर वो अपने ही सवाल का जवाब देते हैं:

'अन्-नज्मुस्-साक़िब — वो छेदने वाला सितारा' — वो सितारा जिसकी रौशनी इतनी शदीद है कि वो अँधेरे के आर-पार हो जाती है, जैसे कील लकड़ी को चीर देती है।

बेटा, तसव्वुर कीजिए: सहरा की काली रात, मुकम्मल अँधेरा — और एक सितारा, सुई की नोक जितना छोटा, जिसकी रौशनी ना-क़ाबिल-ए-यक़ीन फ़ासलों का सफ़र कर के और उस सारे कालेपन को चीर कर आपकी आँख तक पहुँचती है। अँधेरा बे-इंतिहा है; रौशनी ज़र्रा सी है; और फिर भी रौशनी जीत जाती है।

और अब, बेटा, समझ लीजिए कि अल्लाह ने ठीक इसी की क़सम क्यों खाई। क्योंकि अगली आयत उस रौशनी के बारे में है जो हर इंसानी दिल के अँधेरे को चीर देती है।

हर नफ़्स पर एक निगहबान

'इन कुल्लु नफ़्सिल्-लम्मा 'अलैहा हाफ़िज़ — कोई नफ़्स ऐसा नहीं जिस पर एक निगहबान, एक मुहाफ़िज़ न हो।'

बेटा, इसे आहिस्ता पढ़िए। कोई नफ़्स नहीं — एक भी नहीं, किसी भी सदी में, किसी भी मुल्क में — जो बे-निगरानी छोड़ा गया हो। हर एक इंसान पर एक हाफ़िज़ मुतय्यन है: एक फ़रिश्ता जो हिफ़ाज़त भी करता है और लिखता भी है।

और 'हाफ़िज़' में उलमा का बताया हुआ दोहरा मानी महसूस कीजिए। इसका मतलब है हिफ़ाज़त करने वाला — और हम में से हर एक उन तरीक़ों से महफ़ूज़ रखा जाता है जो हम कभी देख ही नहीं पाते: वो हादसा जो एक सेकंड से टल गया, वो बीमारी जो आई ही नहीं, वो नुक़सान जो हमारे सोते में हटा दिया गया। और इसका मतलब है लिखने वाला — हर लफ़्ज़ और हर अमल महफ़ूज़।

तो वही मुतय्यन मौजूदगी आपकी हिफ़ाज़त भी है और आपका रिकॉर्ड भी, बेटा। यह एक ख़ूबसूरत और झिंझोड़ने वाली जोड़ी है: जो आपकी हिफ़ाज़त कर रहा है वही आपको देख भी रहा है।

और क़सम से ताल्लुक़ देखिए: वो छेदने वाला सितारा सबसे गहरी रात को काट देता है — और अल्लाह की निगरानी हर उस अँधेरे को काट देती है जिसमें इंसान छुपता है।

बंद कमरा, मिटी हुई हिस्ट्री, वो राज़ जिसका किसी को गुमान नहीं, सुबह चार बजे की तन्हाई — एक रौशनी उन सब के आर-पार हो जाती है। बेटा, जब भी आपको कोई गुनाह इसलिए खींचे कि 'किसी को पता नहीं चलेगा', यह आयत याद कीजिए।

देखिए आप किस चीज़ से बने

फिर अल्लाह ग़ौर-ओ-फ़िक्र की दावत देते हैं — और इसका निशाना इंसानी अना है: 'फ़ल्-यन्ज़ुरिल्-इंसानु मिम्म ख़ुलिक़ — तो इंसान देखे कि वो किस चीज़ से बनाया गया।'

'ख़ुलिक़ मिम्-मा-इन दाफ़िक़ — वो एक उछलते हुए पानी से बनाया गया — यख़्रुजु मिम्-बैनिस्-सुल्बि वत्-तराइब — जो रीढ़ और पसलियों के दरमियान से निकलता है।'

बेटा, क़ुरआन यहाँ वो काम करता है जो वो अक्सर करता है: इंसानी तकब्बुर को गालियों से नहीं, एक याद से हवा निकाल देता है। आप जो सीना ताने चलते हैं — अपनी इब्तिदा याद कीजिए। एक बूँद। ऐसी चीज़ जिसे कोई दोबारा नज़र उठा कर भी न देखता।

और फिर वो नतीजा जिसके लिए यह पूरा ग़ौर बनाया गया था: 'इन्नहू 'अला रज्'इही ल-क़ादिर — बेशक वो उसे लौटाने पर क़ादिर हैं।'

बेटा, एक सतर में पूरी दलील। जिस ज़ात ने एक ही बूँद से पूरा इंसान तैयार कर दिया — सुनने, देखने, अक़्ल, जज़्बात, उँगलियों के निशानात के साथ — वो यक़ीनन उसे मौत के बाद दोबारा जमा करने पर क़ादिर हैं। जो पहली तख़्लीक़ मान ले और दूसरी का इनकार करे, उसने ठीक से सोचा ही नहीं। मुश्किल काम तो हो चुका, और वो हर माँ के अंदर, हर रोज़, पूरी दुनिया में हो रहा है।

'यौम तुब्लस्-सराइर — जिस दिन पोशीदा बातों की जाँच होगी, उन्हें बाहर लाया जाएगा।' बेटा, 'सराइर' उन चीज़ों को कहते हैं जो अंदर छुपाई जाती हैं — नीयतें, महरिकात, पोशीदा शख़्सियत। उस दिन इम्तिहान आपके सीवी का नहीं होगा; आपके

अंदर का होगा। आपने जो किया, वो इससे नापा जाएगा कि आपने क्यों किया। वो तक़रीर जो तालियों के लिए दी गई, वो सदक़ा जो तस्वीर के लिए दिया गया, वो हुस्न-ए-सुलूक जो साख़ के लिए किया गया — सब खोल दिया जाएगा।

'फ़-मा लहू मिन क़ुव्वतिंव्-व ला नासिर — फिर उसके पास न कोई ताक़त होगी न कोई मददगार।' वो दो चीज़ें जिन पर लोग ज़िंदगी भर भरोसा करते हैं — अपनी ताक़त और अपने ताल्लुक़ात — दोनों ग़ैर-हाज़िर।

दो क़समें और एक फ़ैसला कुन बात

फिर अल्लाह दोबारा क़सम खाते हैं, दो ऐसी चीज़ों की जो ज़िंदगी के पूरे चक्कर की अलामत हैं: 'वस्-समा-इ ज़ातिर्-रज्'इ — क़सम है उस आसमान की जो लौटाता है — वल्-अर्ज़ि ज़ातिस्-सद्'इ — और उस ज़मीन की जो फटती है।'

बेटा, उलमा 'रज्" की तफ़्सीर आसमान के लौटाने से करते हैं — वो बारिश जो भाप बन कर ऊपर जाती है और फिर नीचे आ जाती है, मौसम दर मौसम, एक ना-ख़त्म होने वाले चक्कर में। और 'सद्" ज़मीन का फटना है जब एक बीज मिट्टी चीर कर ऊपर निकलता है।

क़सम के अंदर छुपी हुई दलील नज़र आ रही है, बेटा? पानी ऊपर जाता है और लौटता है। ज़मीन फटती है और ज़िंदगी निकालती है। वापसी और दोबारा ज़िंदा होना आपकी आँखों के सामने हो रहा है, हर साल, ज़मीन के हर खेत में। अल्लाह दो आम मोजिज़ों की क़सम खा कर एक असाधारण मोजिज़े को साबित कर रहे हैं।

'इन्नहू ल-क़ौलुन फ़स्ल — बेशक ये (क़ुरआन) फ़ैसला कुन बात है — व मा हुव बिल्-हज़्ल — और ये हँसी खेल नहीं है।'

बेटा, 'क़ौलुन फ़स्ल' — वो बात जो अलग कर देती है, फ़ैसला कर देती है, बहस ख़त्म कर देती है। और फिर: 'मा हुव बिल-हज़्ल' — ये कोई मज़ाक़ नहीं, तफ़रीह नहीं, खेलने की चीज़ नहीं।

ये एक ऐसी तंबीह है जिसे ज़ाती तौर पर लेना चाहिए। क़ुरआन शेल्फ़ की सजावट

नहीं है, महफ़िलों का बैकग्राउंड नहीं है, कोई ऐसी आयत नहीं जिसे पोस्ट कर के आगे स्क्रॉल कर दिया जाए। ये आपके वुजूद के मामले पर आख़िरी फ़ैसला है।

उन्हें थोड़ी मोहलत दीजिए

और सूरह एक पुर-सुकून, अज़ीम यक़ीन के मंज़र पर ख़त्म होती है: 'इन्नहुम यकीदून कैदा — बेशक वो एक चाल चल रहे हैं — व अकीदु कैदा — और मैं भी एक तदबीर कर रहा हूँ।'

बेटा, दोनों के लिए वही लफ़्ज़ इस्तेमाल हुआ — कैद — मगर तदबीर कर कौन रहा है? एक तरफ़ मक्का के सरदार अपनी महफ़िलों में तय कर रहे हैं कि इस पैग़ाम को कैसे रोका जाए: बायकाट, अज़ाब, तोहमत, क़त्ल की साज़िश। दूसरी तरफ़: अल्लाह, रब्बुल आलमीन। ये कोई मुक़ाबला नहीं है, बेटा। ये दो चीज़ों का एक ही जुमले में ज़िक्र है ताकि आप ख़ुद फ़र्क़ देख लें।

और फिर आख़िरी आयत — और शायद ये पूरे क़ुरआन का सबसे पुर-सुकून जुमला है: 'फ़-महि्हलिल्-काफ़िरीन अम्हिल्हुम रुवैदा — तो मुनकिरों को मोहलत दीजिए; उन्हें थोड़ी सी देर के लिए छोड़ दीजिए।'

'रुवैदा', बेटा — नरमी से, थोड़ी देर, आहिस्ता। 'अभी उनसे लड़ो' नहीं। 'उनकी हर गाली का जवाब दो' नहीं। बस: उन्हें वक़्त दीजिए। उन्हें दौड़ने दीजिए।

इसमें छुपा हुआ यक़ीन महसूस कीजिए, बेटा। ऐसे सिर्फ़ वो बोलता है जिसे अंजाम का पूरा यक़ीन हो। जो शख़्स परेशान हो वो बहस करता है, चीख़ता है, जल्दी मचाता है। जो अंजाम का मालिक है वो कहता है: उन्हें थोड़ी देर छोड़ दो।

और तारीख़ ने इस आयत को सच्चा कर दिखाया। वो लोग जो मक्का में साज़िशें कर रहे थे — आज कहाँ हैं? बीस साल के अंदर उसी शहर की छतों से अज़ान दी जा रही थी। अल्लाह की तदबीर को जल्दी मचाने की ज़रूरत नहीं थी।

तो ये सूरह आपको तीन चीज़ें दे कर भेजती है, बेटा। एक: आप पर एक निगहबान है, इसलिए अँधेरे में ये समझ कर गुनाह मत कीजिए कि आप अकेले हैं। दो: जिसने

आपको एक बूँद से बनाया, वो यक़ीनन आपको वापस ला सकते हैं, इसलिए तैयार रहिए। और तीन: जब आप पर ज़ुल्म हो और आप जवाब न दे सकें — तो अपने दिल से वही कहिए जो अल्लाह ने अपने रसूल ﷺ से कहा: अम्हिल्हुम रुवैदा। तदबीर करने वाला पहले से काम पर है।

इस सूरह से क्या सीखा

1. रौशनी अँधेरे को चीर देती है — और अल्लाह की निगरानी हर उस पोशीदा जगह को चीर देती है जिसमें इंसान छुपता है।

2. हर नफ़्स पर एक हाफ़िज़ है — एक ही वक़्त में मुहाफ़िज़ भी और लिखने वाला भी: आप महफ़ूज़ भी हैं और देखे भी जा रहे हैं।

3. तकब्बुर की हवा याद से निकालिए: किसी को हक़ीर समझने से पहले उस बूँद को देखिए जिससे आप बने।

4. जिसने मुश्किल काम कर लिया — आपको कुछ नहीं से बनाया — उन्हें आपको वापस लाने में क्या दुश्वारी होगी?

5. उस दिन राज़ों की जाँच होगी: सिर्फ़ ये नहीं कि आप क्या करते हैं, अपना क्यों पाक कीजिए।

6. क़ुरआन को 'क़ौलुन फ़स्ल' समझिए — एक फ़ैसला कुन बात, कभी तफ़रीह या सजावट नहीं।

7. जब मज़लूम और बे-बस हों, तो नबी ﷺ वाला हुक्म ले लीजिए: उन्हें थोड़ी देर छोड़ दीजिए — तदबीर करने वाला पहले से काम पर है।

या हाफ़िज़, हमारे अँधेरों में हमारी हिफ़ाज़त फ़रमाइए, हमारे राज़ जाँचे जाने से पहले पाक कर दीजिए, और हमें अपनी तदबीर पर मुतमइन रखिए। आमीन।